International Journal of Education and Science Research Review

Volume-1, Issue-1 Feburary-2014 ISSN: 2348- 6457

शासकीय एवं अशासकीय हाईस्कूल कक्षा के अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि, नैतिक मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 रत्नेश कुमार त्रिपाठी
प्रवक्ता
मड़ियाहू पी0जी0 कालेज, मड़ियाहू
जौनपुर

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योतिर्मय सुसंस्कृत पक्ष है जिससे उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है। शिक्षा मानक के बौद्धिक एवं सामाजिक विकास में आजन्म चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा मानवीय विचारों एवं व्यवहारों का सृजनात्मक पक्ष है। यदि किसी देश की प्रगति अथवा संस्कृति की सम्पन्नता को मापना है तो उस देश की शैक्षिक प्रगति को सबसे पहले मापना चाहिये। क्योकि शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़कर ही कोई राष्ट्र विकास की चरम सीमा तक पहुँचता है। शिक्षा सामाजिक मूल्यों व आदर्शो को मानव जीवन को स्थापित करती है। शिक्षा ही वह शसक्त मध्यम है जो हमें अज्ञानता की जंजीरों से मुक्त करा सकती है तथा एक शसक्त और खुशहाल समाज का निर्माण करती है। शिक्षा ही एक उन्नतशील राष्ट्र की नींव होती है। शिक्षा अपने अर्थ में पूर्ण होकर उच्च ज्ञान का सृजन करती है तथा राष्ट्रीय संस्कार का निर्माण करती है तथा व्यक्ति में विराट संस्कृति की अवधारणा के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि निर्मित करती है। विज्ञान तथा तकनीकी के वर्तमान युग में शिक्षा को लोगो के जीवन आवश्यकताओं और आकांक्षाों के सम्बद्ध करने के प्रयास ने शिक्षा के कार्यक्षेत्र को न केवल व्यापक अपितु जटिल भी बना दिया है। हमारी राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन धारा के प्रत्येक तन्त्र से शैक्षिक कार्यक्रमों के जुड़ते जाने से उत्तरोत्तर बढ़ता हुा शिक्षा का कार्यक्षेत्र एवं दायित्व न केवल व्यापक ही हुआ है बल्कि हमारे जीवन की ही तरह जटिल भी हुआ है। हर विकसित और विकासशील राष्ट्र समाज अपनी प्रगति एवं विकास के समग्र कार्यक्रमो को शिक्षा से सम्बद्ध करता जा रहा है सामाजिक संरचना, सामाजिक सम्बन्ध तथा सामाजिक अन्तःक्रिया उसी गति से जटिल होती जा रही है। कुल मिलाकर हर व्यक्ति राष्ट्र एवं समाज के समक्ष समस्याओं एवं चुनौतियों की संख्या बढ़ती जा रही है। फलतः शिक्षा की भूमिका और उसके कार्य क्षेत्र में व्यापकता का आना स्वाभाविक प्रक्रिया बन कर रह गयी है। आज शिक्षा का दायित्व व्यक्तित्व का विकास एवं चारित्रिक नैतिक मूल्यों के विकास तक सिमित न होकर समग्र समाज के आर्थिक विकास के साथ–साथ सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन प्राप्ति एवं विकास के साथ जुड़ गया है इसलिए शिक्षा का आज

सामाजिक परिवर्तन एवं प्रगति का एक शसक्त साधन मान ली गयी है। और शिक्षा अपने इन दायित्वों को तभी पूर्ण कर सकती है जो वह शुद्ध, सरल, संतुलित वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुसज्जित सामाजिक जीवन के बीच बालक को सामाजिक अनुभवों के द्वारा शिक्षित करने का प्रयास करें। वर्तमान शिक्षा को सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकता तथा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए एक शसक्त माध्यम तथा उसके प्रति संवेदनशील होना चाहिए तथा शिक्षा को प्रासंगिक बनाये रखने हेतु उसमें नये उद्देश्यों को प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। जिससे शिक्षा का उत्तम सम्भावनाओं को कायम रखने वाली एक प्रक्रिया रूप में सक्रिय बनी रहे। राष्ट्र के बहुमुखी विकास तथा प्रत्येक नागरिक के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आवश्यक है कि वर्तमान में शिक्षा प्रणाली को सामयिक समस्याों व चुनौतियों के संदर्भ में सकारात्मक अभिकरण के रूप में प्रतिस्थापित किया जाय तथा शिक्षा के माध्यम से ऐसे समाज का सृजन किया जाय जो कि आदर्शो मूल्यों सामाजिक मानदण्डों से परिपूर्ण तथा भविष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सक्षम हों। शिक्षा में जीवन के साधनों के अर्जन के साथ ही अतिरिक्त चेतना के परिमार्जन का भी स्थान हो। इसलिये शिक्षा समाज में ऐसे वातावरण का सृजन करें जिससे समाज मूल्यों, आदर्शो, संस्कारों व उच्चतर मानसिक उपलब्धियों से सुसज्जित व्यक्तियों के निर्माण की जन्म स्थली बन जाय।

समस्याः–

शासकीय एवं अशासकीय हाईस्कूल कक्षा के अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि, नैतिक मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन''

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरणः–

शोध प्रबन्ध में विभिन्न चरों की स्पष्टता तथा उचित अर्थ बोध के लिए आवश्यक है कि जिन, शब्दों समूहों या शब्द पदों का प्रयोग किया जाय वे न केवल सहज सुगम तथा सर्वाग्राह्य हो बल्कि शोध कार्य में जहां–जहां उनका प्रयोग किया जाय वे एक अर्थ में अर्थबोध कराये। शोध अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ निम्नवत स्पष्ट किया गया है–

शासकीय– ऐसे विद्यालय जिन्हें सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त होता है जिनको सरकार द्वारा अनुशासित एवं संरक्षण प्राप्त होता है।

अशासकीय– ऐसे विद्यालय जिन्हें सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त होता है तथा इन विद्यालयों पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण नही होता है।

बुद्धि–प्रस्तुत शोध में छात्रों की बुद्धि से तात्पर्य स्वयं के निर्णय से समस्या समाधान करने नवीन परिस्थितियों में अनुकूल करने, अमूर्त ढंग से सोचने तथा अनुभवो से लाभ उठाने सम्बन्धी किसी व्यक्ति के क्षमता से है।

नैतिक मूल्य– उचित और अनुचित के भाव में अन्तर स्पष्ट करने की भावना नैतिकता कहलाती है।

समायोजन– समायोजन की प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं को वातावरण के अनुकूल बनाता है या वह वातावरण को ही स्वयं के अनुकूल बना लेता है।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा कक्षा में प्राप्त विषयगत उपलब्धियों से है।

आवश्यकता एवं महत्वः–

वर्तमान युग में वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के साथ–साथ भारतीय शिक्षा का उपनिवेशवादी चरित्र शनैः शनैः परिवर्तित हो रहा है लेकिन इस विकास के साथ–साथ व्यक्ति, समाज तथा शिक्षा के समक्ष अनेक समस्या है जिनका समाधान समस्या के क्षेत्र में अनुसंधान करके और उससे प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर ही किया जा सकता है। इस अध्ययन कास मुख्य उद्देश्य शासकीय और अशासकीय हाईस्कूल कक्षा में अध्ययनरत छात्रों की बुद्धि नैतिक मूल्य समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना है। किसी भी शोध कर्ता शासकीय व अशासकीय हाईस्कूल कक्षा के छात्रों की बुद्धि नैतिक मूल्य समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में क्या अन्तर है। इस पर अध्ययन नही किया है। पिछले 10 से 15 वर्षो में अशासकीय विद्यालयों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुयी है। जिसका एक दुष्परिणाम यह सामने आया है कि इन अशासकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के नीचे गिरने की बात सुनने को मिलती है। जहा पर विद्यालय प्रशासन मात्र शिक्षण शुल्क पर ही ध्यान केन्द्रित करता है शिक्षण कार्य पर नही इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें यह पता लगाना है कि इन विद्यालयों में शिक्षा की क्या स्थिति है। आज के छात्रों में नैतिक मूल्य के ह्रास की समस्या एक ज्वलन्त प्रश्न है जिसने सारी शिक्षा व्यवस्था पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है इस समस्यस को देखते हुए विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक विषय के रूप में सम्मिलित तो अवश्य किया गया है लेकिन समाज का नैतिक पतन जारी है। आज विद्यालय ही भ्रष्टाचार, अराजकता के केन्द्र बनते जा रहे है इसलियें इस विषय पर भी शोध की आवश्यकता है। शिक्षा का एक उद्देश्य छात्रों में उनके वातावरण के अनुरूप उनमें समायोजन की क्षमता को विकसित करना होता है। छात्रों को इस समायोजन के आधार पर दो वर्गो में रखा गया है–

(क) उच्च समायोजित समूह (ख) निम्न समायोजित समूह

इन सबको आधार मानकर ही छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का आधार करने की आवश्यकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः–

शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों की वृद्धिलब्धि ज्ञात करना।

2. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य ज्ञात करना।
3. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का समायोजन क्षमता ज्ञात करना।
4. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
5. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों की वृद्धिलब्धि ज्ञात करना।
6. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य ज्ञात करना।
7. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का समायोजन क्षमता ज्ञात करना।
8. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

5. शोध अध्ययन की परिकल्पनाः—

शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य के अध्ययन के निम्नलिखित परिकल्पनाएँ है—

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों की वृद्धिलब्धि में अन्तर नही है।
2. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य में अन्तर नही है।
3. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नही है।
4. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।
5. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों की वृद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।
6. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर नही है।

7. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का समायोजन क्षमता में अन्तर नही है।
8. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

शोध कार्य विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन की कार्यविध्यि के अन्तर्गत सर्वप्रथम यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन करके शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों का प्रयोग करके प्रशासन के द्वारा आँकड़ों का संकलन कर प्राप्तांक प्रज्ञपत किये गये प्राप्त प्राप्तांकों से शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यकीय विधि से CR मान निकाला गया। CR सारणी को देखकर सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया तत्पश्चात CR सारणी के मान 1.96 से तुलना करके परिकल्पनाओं का सत्यापन किया गया।.

शोध उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के बुद्धिलब्धि के मापन हेतु मोहनचन्द्र जोशी निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया है। छात्रों के नैतिक मूल्य के मापन हेतु कु0 रंजना गुप्ता द्वारा निर्मित मारल जजमेन्ट टेस्ट, समायोजन क्षमता के मापन हेतु एच0एस0 अस्थाना द्वारा निर्मित समायोजन मापनी और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के लिये उनके कक्षा 10 में अर्जित किये हुए अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक प्राप्तांको को आधार माना गया है इसके पश्चात शासकीय और अशासकीय नैतिक मूल्य, समायोजन क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का अलग–अलग मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। इस गणना के पश्चात उसके अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिसीमाएं–

मध्य प्रदेश की रीवां सम्भाग को केन्द्र मानकर किया सम्पूर्ण न्यादर्श रीवां सम्भाग के जनपदों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय अशासकीय विद्यालयों से लिया गया है। जिनमें छात्रों का चयन स्तरीकृत यदृच्छिक विधि से किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 400 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यदृच्छिक विधि से किया गया है जिसमें 200 शहरी छात्र व 200 ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्र रहे जिसमें 200 शहरी छात्रों में से 100 छात्र शासकीय विद्यालयों से व 100 छात्र अशासकीय विद्यालयों से है। इसी तरह 200 ग्रमीण पृष्ठभूमि के छात्रों में से 100 छात्र अशासकीय विद्यालयों से और 100 छात्र शासकीय विद्यालयों से है।

Volume-1, Issue-1 Feburary ISSN: 2348- 6457

आँकड़ों का संकलनः–

सर्वप्रथम न्यादर्श में सम्मिलित हाईस्कूल शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों पर मोहनचन्द्र जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण छात्रों के नैतिक मूल्यों के मापन हेतु कु0 रंजना गुप्ता निर्मित मारल जजमेन्ट टेस्ट समायोजन के मापन हेतु एच0एस0 अस्थाना द्वारा निर्मित समायोजन मापनी और शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनके कक्षा 10 में अर्जित किये हुये अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक प्राप्तांकों को आधार माना गया है। इन सभी उपकरणों का प्रशासन करके बुद्धि नैतिक मूल्य समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी आँकड़ों का संकनल किया गया। आँकड़ों के संकलन के पश्चात सांख्यकीय विधियों का प्रयोग करके परिणाम प्राप्त किये गये।

प्रयुक्त सांख्यकीय विधि–

$$CR = \frac{M_2 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

जिसमें M_1 = प्रथम समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान

σ_1 =द्वितीय समूह के प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन

σ_2 =द्वितीय समूह के प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन

N_1 = प्रथम समूह की कुल संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की कुल संख्या

परिणाम विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध ध्ययन के परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण शोध अध्ययन में शामिल सारणियों के अधार पर की गई है। जो कि निम्नलिखित हैः–

परिकल्पना संख्या–1 शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नही है–

सारणी क्र0 1

शहरी क्षेत्र बुद्धिलब्धि की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	56.34	13.73	5.05	0.01 सार्थक है।
अशासकीय	100	46.42	14.07		

सारणी क्र0 1 में देखने से यह ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों 100 छात्रों का मध्यमान 56.34 मानक विचलन (S.D.) 13.73 है तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 46.42 एवं S.D. 14.07 है तथा CR मान 5.05 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.01 सार्थकता स्तर पर यह मान सार्थक है। अर्थात् शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या–2 शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल कक्षा के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नैतिक मूल्य अन्तर नही है–

सारणी क्र0 2

शहरी क्षेत्र नैतिक मूल्य की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	43.67	10.56	2.131	0.05 सार्थक है।
अशासकीय	100	40.23	12.21		

सारणी क्र0 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 43.67 मानक विचलन (S.D.) 10.56 है तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 40.23 है, मानक विचलन S.D. 12.21 है तथा दोनों का CR मान 2.131 है, जो कि CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अर्थात् शहरी क्षेत्र में शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या–3 शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में समायोजन क्षमता के प्राप्तांक में अन्तर नही है–

सारणी क्र0 3

शहरी क्षेत्र समायोजन क्षमता के अन्तर की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	27.31	12.69	1.683	0.05 असार्थक है।
अशासकीय	100	24.67	10.01		

सारणी क्र0 3 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 27.31 है और 12.69 है और अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 24.67 और मानक विचलन 10.01 है तथा दोनों का CR मान 1.683 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 की अपेक्षा प्राप्त CR मान कम है इसलिये परिकल्पना से 3 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में समायोजन क्षमतामें सार्थक अन्तर नही है को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना संख्या–4 शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नही है–

सारणी क्र0 4

शहरी क्षेत्र शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	852.31	52.36	0.946	0.05 सार्थक है।
अशासकीय	100	845.49	49.53		

सारणी क्र0 4 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 852.31 है तथा मानक विचलन 52.36 है एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 845.49 है, तथा मानक विचलन S.D. 49.53 है तथा दोनों का CR मान 0.946 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना से 3 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना संख्या–5 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की बुद्धिलब्धि में अन्तर नही है–

सारणी क्र0 5

ग्रामीण क्षेत्र बुद्धिलब्धि की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	69.63	13.07	0.950	0.05 असार्थक है।
अशासकीय	100	67.89	12.81		

सारणी क्र0 5 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों 100 छात्रों का मध्यमान 69.63 एवं मानक विचलन 13.07 है तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 67.89 तथा मानक विचलन 12.81 है दोनों का CR मान 0.950 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

परिकल्पना संख्या–6 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नैतिक मूल्य अन्तर नही है–

सारणी क्र0 6

ग्रामीण क्षेत्र में नैतिक मूल्य की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	52.73	14.03	2.264	0.05 सार्थक है।
अशासकीय	100	48.41	12.99		

सारणी क्र0 6 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रमीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 52.73 तथा मानक विचलन (S.D.) 14.03 है तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 48.41 है, तथा मानक विचलन 12.99 है दोनों का CR मान 2.264 है। CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य में अन्तर है।

परिकल्पना संख्या–7 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में समायोजन क्षमता में अन्तर नही है–

सारणी क्र0 7

ग्रामीण क्षेत्र में समायोजन क्षमता की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	36.12	9.53	1.759	0.05 असार्थक है।
अशासकीय	100	38.73	10.37		

सारणी क्र0 7 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 36.12 है तथा मानक विचलन 9.53 है तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 38.73 तथा मानक विचलन 10.37 है, दोनों का CR मान 1.759 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नही है।

परिकल्पना संख्या–8 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नही है–

सारणी क्र0 8

ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	CR मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	852.67	69.35	1.479	0.05 असार्थक है।
अशासकीय	100	867.83	75.42		

सारणी क्र0 8 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 852.67 है तथा मानक विचलन 69.35 है और अशासकीय विद्यालयों के 100 छात्रों का मध्यमान 867.83 तथा मानक विचलन 75.42 है तथा दोनों का CR मान 1.479 है, CR सारणी देखने पर यह ज्ञात होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षः–

शोध अध्ययन के परिणामों की व्याख्या और विश्लेषण के आधार पर शोध अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर है इसका प्रमुख कारण यह है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में प्रवेश परीक्षा तथा अन्य मानदण्डों के अनुसार किया जाता है। उसके अध्यापक योग्य व प्रशिक्षण प्राप्त होते है। जबकि अशासकीय विद्यालय मात्र पने छात्र संख्या को बढ़ाने पर जोर देते है।
2. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर है इससे यह स्पष्ट होता है कि आज के भौतिकवादी परिवेश में भी शासकीय विद्यालय अपने छात्रों के नैतिक गुणों के विषय के लिए प्रयासरत है जिससे यहा के छात्रों में नैतिक गुणों, आचरणों मूल्य आधारित व्यवहारों आदि की भावना अच्छी पायी गयी है।
3. शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अनुशासन, शिक्षण कार्य सामान्य रूप से अशासकीय विद्यालयों में कुशल शिक्षको द्वारा किया जाता है इसलिए समायोजन क्षमता की दृष्टि से शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में अन्तर नही दिखाई दिया।
4. शहरी क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत हाईस्कूल के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है। क्यों कि दोनो विद्यालयों के छात्रों में अपने शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में प्रयासरत पाया गया। इसका अर्थ यह है कि समान सामाजिक ार्थिक शैक्षिक वातावरण की उपलब्धता होने के कारण उनके शैक्षिक स्तर में कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई पड़ता है।
5. ग्रामीण शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की बुद्धिलब्धि में कोई सकारात्मक अन्तर नही है अर्थात् ग्रामीण शासकीय औश्र अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की बुद्धिलब्धि में समानता प्रदर्शित होता है। अध्ययन के दौरान ऐसा पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों की शैक्षिक गतिविधयॉ लगभग समान रूप से चलती है और विद्यालयों का वातावरण भी लगभग समान ही रहता है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ग्रामीण शासकीय और अशासकीय विद्यालयों का शैक्षिक स्तर एक समान होता है। इ सका कारण शिक्षको की समान योग्यता प्रशिक्षण दशा और दिशा एक जैसा होना हो सकता है।
6. शासकीय विद्यालयों के छात्रों के नैतिक मूल्य में समृद्धि अशासकीय छात्रों की अपेक्षा अधिक है जबकि अशासकीय विद्यालयों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक गतिविधियॉ उनके मूल्य में गिरावट के प्रति सचेत न होना दृष्टिगोचर होता है। जबकि ाज इस बात की अत्यन्त ावश्यकता है कि छात्रों को मूल्यों से विमुख होने से बचाया जाय।
7. ग्रामीण शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के समायोजन में कोई बहुत अन्तर नही है। ऐसा लगता है कि दोनो प्रकार के विद्यालयों की समान सामाजिक आर्थिक वातावरण तथा समान शैक्षिक गतिविध्यियां इसका कारण हो सकती है।

8. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नही है। यहाँ यह भी दिखाई पड़ता है कि शासकीय विद्यालयों की सामाजिक आर्थिक शैक्षिक स्तर एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियॉ पाठ्य सहगामी क्रियाएं सांस्कृतिक कार्यक्रम समय–समय पर चलते रहते है इसलिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि में समुचित वृद्धि होती रहती है। तो दूसरी तरफ अशासकीय विद्यालयों के व्यवस्थापक भी समय–समय पर ऐसे अनेक गतिविधियों कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते है। इससे उनका व्यावसायिक हित तो बढ़ता ही है साथ ही छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है। इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शासकीय और अशासकीय विद्यालयों की शैक्षिक गतिविधियॉ शिक्षा स्तर तथा प्रबन्धन में कोई विशेष अन्तर न होने के कारण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान दिखाई पड़ती है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन – डॉ0 ए0के0 गुप्ता।
2. व्यवहार विज्ञानों में अनुसंधान के प्रयोगात्मक अभिकल्प – डॉ0 आर0पी0 भटनागर, लायल बुक डिपो मेरठ।
3. अध्यापक षिक्षा – डॉ0 आर0एस0 षर्मा, ई–मेल बुक्स इण्टरनेषनल मेरठ।
4. सेकेण्ड्री स्कूल के विद्यार्थियों में षैक्षिक उपलब्धियों और बौद्धिक सहसम्बन्धों का एक अध्ययन। – बिल एल0जे0 स्थिलिका
5. सेकेण्ड्री स्कूल के छात्रों के संदर्भ में उपलब्धि अभिप्रेरणा, षैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन । – गोकुल नाथ पी0 1972
6. राजस्थान के आदिवासी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता सृजनात्मकता एवं उनकी षैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन। – गोवालकर एस0 1986
7. विभिन्न प्रकार के जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन। – जैन एस0सी0 उद्घृत राहुल

8. आर्थिक स्तर दुष्चिंता एवं उचलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में षैक्षिक उपलब्धि एवं लिंग का एक अध्ययन। – गुप्ता जे0पी0 1978

9. पारिवारिक परिवेष का बालक एवं बालिकाओं की मूल्य विकास पर प्रभाव का एक अध्ययन। – अर्चना कपूर

10. जबलपुर षहर के किषोर छात्राओं में बुद्धि के सम्बन्ध में आत्मविष्वास का अध्ययन। – कुमार आदित्य

11. षिक्षा मनोविज्ञान – पी0डी0 पाठक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

12. अनुसंधान परिचय – एल0एल0 अग्रवाल, संजय प्लेस, आगरा।

13- **A** History of experimental psychology 1950 - Boring, Land Field and Welt

14. Interaction of Personality and creativity” Ph.D. Education B.H.U. Varanasi - Bhattacharya, S.B. 1978

15. Besik shiksha sidhant - Bharadwaz Dinesh chand 1977